**International Journal of Sociology and Political Science**
**www.sociologyjournal.in**
**Online ISSN: 2664-7745**
**Received: 05-12-2025, Accepted: 04-01-2026, Published: 19-01-2026**
**Volume 8, Issue 1, 2026, Page No. 131-136**

# स्वामी विवेकानंद के चिंतन पर आधारित प्रमुख शोध अध्ययनों का समीक्षाात्मक विश्लेषण

**प्रो. डॉ. वंदना शर्मा[1], अशोक यादव[2]**
[1] प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, बरेली कॉलेज बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, बरेली कॉलेज बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

**सारांश**
प्रस्तुत शोध पत्र में भारत तथा विदेशों में स्वामी विवेकानन्द के सामाजिक, शैक्षिक, दार्शनिक और मानवीय चिंतन पर किए गए प्रमुख शोध अध्ययनों की समीक्षा की गई है। उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट होता है कि स्वामी विवेकानन्द के विचार शिक्षा, राष्ट्रवाद, सामाजिक समरसता, मानवतावाद, जाति–व्यवस्था, धार्मिक सहिष्णुता, नेतृत्व तथा सामाजिक पुनर्निर्माण जैसे अनेक विषयों में व्यापक रूप से अध्ययन का विषय रहे हैं। भारतीय संदर्भ में समकालीन शोधों ने विशेष रूप से उनके शिक्षा–दर्शन, चरित्र–निर्माण, आत्मनिर्भरता तथा मानव–निर्माण की अवधारणा को वर्तमान शिक्षा व्यवस्था और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में महत्वपूर्ण माना है।
तिवारी एवं यादव के अध्ययन में विवेकानन्द के शैक्षिक चिंतन को भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से जोड़ते हुए यह प्रतिपादित किया गया है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना या रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि व्यक्ति में निहित पूर्णता का विकास करना है। इसी प्रकार अन्य शोधों में उनके विचारों को चरित्र–निर्माण, आत्मनिर्भरता, मानवतावाद तथा सर्वांगीण विकास के लिए उपयोगी बताया गया है। शर्मा एवं अग्रवाल तथा रेनू एवं चौहान के अध्ययनों में विवेकानन्द के शिक्षा–दर्शन को आधुनिक शिक्षा के लिए अत्यंत प्रासंगिक माना गया है।
स्वामी विवेकानन्द के सामाजिक और राजनीतिक चिंतन पर हुए अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि उनका दर्शन सामाजिक समरसता, मानव–सेवा, राष्ट्रीय जागरण और सामाजिक पुनर्निर्माण पर आधारित था। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम माना तथा समाज के कमजोर एवं उपेक्षित वर्गों के उत्थान पर विशेष बल दिया। पूर्ववर्ती शोधों में 'दरिद्रनारायण' की अवधारणा, आध्यात्मिक मानवतावाद, जातिगत असमानता के विरोध तथा महिला शिक्षा और धार्मिक सहिष्णुता के संबंध में उनके विचारों का विश्लेषण किया गया है।
विदेशों में भी स्वामी विवेकानन्द के विचारों पर व्यापक शोध हुआ है। अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस और जापान सहित अनेक देशों के विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों ने उनके वेदान्त दर्शन, योग, मानवतावाद, धार्मिक बहुलवाद, शिक्षा–दृष्टि, नेतृत्व तथा पूर्व और पश्चिम के सांस्कृतिक संवाद में योगदान का अध्ययन किया है। अमेरिकी शोधों में उन्हें भारतीय आध्यात्मिकता को आधुनिक और सार्वभौमिक रूप में प्रस्तुत करने वाले विचारक के रूप में देखा गया है। ब्रिटिश अध्ययनों ने आधुनिक हिन्दू धर्म, भारतीय राष्ट्रवाद और धार्मिक बहुलवाद के विकास में उनके योगदान को महत्वपूर्ण माना है। जर्मन विद्वानों ने उनके व्यावहारिक वेदान्त, मानव–सेवा और आधुनिक हिन्दू चिंतन का गहन विश्लेषण किया है।
अन्य देशों में हुए शोधों से भी यह निष्कर्ष निकलता है कि विवेकानन्द केवल भारत के आध्यात्मिक गुरु नहीं, बल्कि विश्व मानवता के चिंतक थे। उनके विचार धार्मिक सहिष्णुता, विश्व शांति, मानव समानता, नेतृत्व, योग, व्यक्तित्व विकास तथा अंतरसांस्कृतिक संवाद के लिए आज भी प्रासंगिक हैं।

**मुलशब्द:** स्वामी विवेकानन्द, शैक्षिक दर्शन, सामाजिक चिंतन, मानवतावाद, राष्ट्रवाद, चरित्र–निर्माण, आत्मनिर्भरता, धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक समरसता, व्यावहारिक वेदान्त, नेतृत्व, सामाजिक पुनर्निर्माण, भारतीय शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अंतर–सांस्कृतिक संवाद

## प्रस्तावना

अनुसंधान एक व्यवस्थित, वैज्ञानिक तथा तर्कसंगत प्रक्रिया है जिसके माध्यम से किसी समस्या का समाधान खोजा जाता है या नए ज्ञान का सृजन किया जाता है। किसी भी अनुसंधान की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि शोधार्थी ने अपने विषय से संबंधित उपलब्ध साहित्य का कितना गहन और व्यवस्थित अध्ययन किया है। भारत में स्वामी विवेकानंद के सामाजिक चिंतन पर पर्याप्त शोध हुआ है, किंतु यह शोध विभिन्न विषयों–सामाजिक दर्शन, राजनीतिक चिंतन, राष्ट्रवाद, शिक्षा, जाति–व्यवस्था, मानवतावाद तथा सामाजिक पुनर्निर्माण–में बिखरा हुआ है।
तिवारी, विनोद प्रकाश एवं यादव, सत्य नारायण (2026) का शोध पत्र स्वामी विवेकानंद के दर्शन को भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के व्यापक आलोक में विश्लेषित करने का एक विनम्र प्रयास है। लेखकों के अनुसार स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक चिंतन न केवल कालजयी है, बल्कि यह आधुनिक शिक्षा के समक्ष उपस्थित चुनौतियों का समाधान करने में भी सक्षम है।यह शोध पत्र इस दार्शनिक आधार को केंद्र में रखकर स्वामीजी के उन विचारों की व्याख्या करता है, जो मनुष्य के आत्मिक, बौद्धिक और शारीरिक उत्थान के लिए अनिवार्य हैं। प्रस्तुत शोध में यह गहन विश्लेषण किया गया है कि कैसे स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार, विशेष रूप से चरित्र निर्माण, आत्म–निर्भरता और मानवतावादी दृष्टिकोण, NEP- 2020 के प्रमुख लक्ष्यों और उद्देश्यों के साथ सामंजस्य बिठाते हैं। यह शोध स्पष्ट करता है कि विवेकानंद द्वारा प्रतिपादित मानव–निर्माण की शिक्षा ही वह आधार है, जिस पर एक सशक्त, नैतिक और आत्मनिर्भर राष्ट्र का निर्माण संभव है।
दामले एन आमोद (2025) ने अपनी पुस्तक 'विवेकानंद ऑन कल्चर एंड इनइक्वालिटी' (संस्कृति और असमानता पर विवेकानंद) में स्वामी विवेकानंद के सांस्कृतिक दर्शन और असमानता के प्रश्न का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। अध्ययन में विवेकानन्द के विचारों की विभिन्न व्याख्याओं की समीक्षा करते हुए यह चर्चा की गई कि उनके सांस्कृतिक दर्शन को समानता और सामाजिक पदानुक्रम, दोनों संदर्भों में कैसे समझा गया है। लेखक के अनुसार स्वामी विवेकानंद आधुनिक भारतीय इतिहास की सबसे प्रभावशाली और विवादास्पद हस्तियों

में से एक हैं। कुछ लोग उन्हें जाति व्यवस्था को चुनौती देने वाले उदारवादी सुधारक के रूप में सम्मान देते हैं, तो कुछ उन्हें हिंदू राष्ट्रवाद के जनक के तौर पर देखते हैं। विवेकानंद की विरासत में गहरे विरोधाभास मिलते हैं। पुस्तक उनकी सांस्कृतिक विचारधारा और सामाजिक पदानुक्रम व राष्ट्रीय पहचान पर उसके असर पर ध्यान केंद्रित करते हुए इन विरोधाभासों का आलोचनात्मक विश्लेषण करती है। यह पुस्तक बताती है कि कैसे आध्यात्मिक और दार्शनिक आदर्शों पर आधारित विवेकानंद की संस्कृति की सोच ने असमानता की व्यवस्था को चुनौती भी दी और उसे बनाए भी रखा। जहाँ उन्होंने सभी के सम्मान और राष्ट्रीय एकता की बात की, वहीं उनके सांस्कृतिक आदर्श ने ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म को आध्यात्मिक पदानुक्रम में सबसे ऊपर रखा, जिससे अंततः सामाजिक विभाजनों को खत्म करने के बजाय उन्हें सही ठहराया गया। उनकी रचनाओं और भाषणों के गहन अध्ययन के माध्यम से, यह पुस्तक तर्क देती है कि विवेकानंद के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ने असमानता को सूक्ष्म रूप से एक नैतिक और आध्यात्मिक आवश्यकता में बदल दिया। राष्ट्रवाद, सामाजिक न्याय और धार्मिक पहचान पर समकालीन बहसों के संदर्भ में विवेकानंद के विचारों को रखकर, यह अध्ययन हिंदू जनता के बड़े वर्ग के बीच उनके विचारों की निरंतर लोकप्रियता पर प्रकाश डालता है। यह आज की दुनिया में असमानता को सही ठहराने के लिए संस्कृति के इस्तेमाल के बारे में महत्वपूर्ण सवाल भी उठाता है, जिससे यह पुस्तक धर्म, राजनीतिक सिद्धांत, दक्षिण एशियाई अध्ययन और सांस्कृतिक इतिहास के विद्वानों और छात्रों के लिए एक जरूरी अध्ययन सामग्री बन जाती है।

गुप्ता, विनीत (2024) ने स्वामी विवेकानन्द के राजनैतिक एवं सामाजिक चिंतन की वर्तमान परिपेक्ष्य में सार्थकता पर अध्ययन किया एवं ये निष्कर्ष प्राप्त किया कि स्वामी विवेकानंद भारतीय समाज के महान संत और राष्ट्रवादी विचारक थे, जिनके विचार आज भी समाज और राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उनके राजनैतिक एवं सामाजिक चिंतन ने न केवल भारतीय समाज को जागरूक किया, बल्कि यह आधुनिक भारत की नींव रखने में भी सहायक सिद्ध हुआ। उनका दृष्टिकोण समग्र विकास, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय जागरण पर केंद्रित था। शोध में बताया गया कि विवेकानंद का राष्ट्रवाद, सामाजिक समरसता, आत्मनिर्भरता और मानव सेवा का दर्शन आज भी भारतीय समाज के लिए प्रासंगिक है।

शर्मा,संतोष कुमार एवं अग्रवाल, अक्षय (2023) ने स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन एवं वर्तमान शैक्षिक प्रतिमान का तुलनात्मक अध्ययन किया। अपने शोध पत्र में शोधार्थी ने विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपयोगिता को परिलक्षित किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में ऐतिहासिक अनुसंधान विधि को आधार बनाया गया है तथा प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के द्वारा निष्कर्ष निकाले गए हैं। निष्कर्ष रूप में बताया गया कि स्वामी विवेकानन्दजी ने आधारभूत भारतीय जीवन मूल्यों एवं जनशिक्षा की अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में तर्कसंगत व्याख्या की है। स्वामीजी की शिक्षा में परम्परा एवं आधुनिकता, पूर्व–पश्चिम, आध्यात्मिकता तथा वैज्ञानिकता का सामंजस्य एवं समन्वय विशेष उल्लेखनीय हैं। इस शिक्षा के द्वारा उन्होंने समाजसेवा एवं जनशिक्षा, आध्यात्मिक एवं धार्मिक पुनरुत्थान व जागृति को प्रमुख ध्येय माना है। उन्होंने अपने शिक्षा दर्शन में अपनी ओजस्वी वाणी, भारतीय धर्म–साधना एवं ज्ञान–विज्ञान के चिरस्थायी मूल्यों की उपयोगिता का जयघोष किया। निष्कर्ष में यह भी पाया गया कि वर्तमान शोध अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक शिक्षा को औचित्यपूर्ण बनाने के लिए स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों तथा मूलभूत सिद्धान्तों का अमूल्य योगदान है। स्वामीजी की शिक्षा योजना के बिना आधुनिक शिक्षा योजना की स्थिति जड़ रहित वृक्ष की भाँति होगी।

रेनू एवं चौहान, भूपेंद्र सिंह (2022) ने वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता पर एक अध्ययन किया है। शोधार्थी ने द्वितीयक स्रोतों की सहायता से अध्ययन किया और एकत्रित जानकारी की व्याख्या के लिए सामग्री विश्लेषण पद्धति को अपनाया गया। उन्होंने पाया कि दर्शन के इन विद्यालयों में स्वामी विवेकानंद का भारतीय शिक्षा प्रणाली के प्रति योगदान अत्यधिक प्रभावशाली था। अध्यात्म स्वामी विवेकानंद दर्शन की बहुमुखी विशेषता है। स्वामी विवेकानंद का दर्शन भारतीय शिक्षा प्रणाली के पुनर्निर्माण का पथप्रदर्शक था। उनके विचारों, दर्शन में वेदों का प्रभाव अधिक प्रमुख था, जो आत्मनिर्भरता, आत्मज्ञान, निडरता और एकाग्रता के रूप में चित्रित किया गया था। स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का अर्थ है वह प्रक्रिया जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मन की शक्ति बढ़ती है, और बुद्धि तेज होती है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। उन्होंने मनुष्य को शरीर, मन और आत्मा का योग माना और कहा कि मानव जीवन के दो पहलू हैं–भौतिक और आध्यात्मिक। आधुनिकीकरण के प्रति उनका दृष्टिकोण यह है कि कुछ भी करने से पहले जनता को शिक्षित किया जाना चाहिए। उनके लिए सच्ची शिक्षा वाहक के लिए नहीं बल्कि राष्ट्र के लिए योगदान के लिए थी।

पुष्पेंद्र एवं कौशल, अमित (2021) ने स्वामी विवेकानन्द एवं महात्मा गाँधीजी के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस लघु शोध में इसके लिए ऐतिहासिक व वर्णनात्मक विधि का उपयोग किया गया। शोधार्थी के अनुसार स्वामी विवेकानन्द इस युग के पहले भारतीय थे जिन्होंने हमें हमारे देश की आध्यात्मिक श्रेष्ठता और पाश्चात्य देशों की भौतिक श्रेष्ठता से परिचित कराया और हमें अपने भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास के लिए सचेत किया। इन्होंने उद्घोष किया कि भारत के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करो और शिक्षा द्वारा उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कुशलतापूर्वक कार्य करने के लिए सक्षम करो, उसे स्वावलम्बी बनाओ, आत्मनिर्भर बनाओ, स्वाभिमानी बनाओ और इन सबसे ऊपर एक सच्चा मनुष्य बनाओ जो मानव सेवा द्वारा ईश्वर की प्राप्ति में सफल हो। स्वामी विवेकानन्दजी को भारत के अतीत और वर्तमान के बीच एक बहुत बड़ा संयोजक माना जाता है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में गुप्त,ा कंचन द्वारा प्रस्तुत पीएच.डी. शोध 'आधुनिक भारतीय दर्शन को स्वामी विवेकानंद का अवदान एक समीक्षात्मक अध्ययन' (1998) विवेकानंद के दार्शनिक एवं सामाजिक विचारों का समालोचनात्मक अध्ययन है। इसमें विशेष रूप से जिन विषयों पर चर्चा की गई है वे हैं–अद्वैत वेदान्त का सामाजिक रूपांतरण, मानवतावाद, सामाजिक समरसता, आधुनिक भारतीय समाज पर प्रभाव एवं धार्मिक सार्वभौमिकता।

अपने पी.एच.डी. शोध ग्रंथ पर आधारित लिखित पुस्तक में मिश्रा, कविता (1997) ने स्वामी विवेकानंद के सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों का एक आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। इसमें विवेकानंद के सामाजिक दर्शन, जाति व्यवस्था, महिला शिक्षा, राष्ट्रवाद, धार्मिक सहिष्णुता, मानव सेवा तथा आधुनिक भारत के निर्माण संबंधी विचारों का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध के मुख्य निष्कर्ष निम्न प्रकार से हैं–

- विवेकानंद के सामाजिक सुधार का आधार आध्यात्मिक मानवतावाद है।
- 'दरिद्रनारायण' की अवधारणा उनके सामाजिक न्याय का आधार बनती है।
- उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम माना गया।

- उन्होंने जातिगत असमानता के स्थान पर कर्म एवं योग्यता आधारित समाज का समर्थन किया।

डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा में शर्मा, गीता रानी का शोध 'स्वामी विवेकानंद के विचार एवं उनके राष्ट्रीय चेतना पर प्रभाव' (1980) विवेकानंद के राष्ट्रवादी एवं सामाजिक विचारों के प्रभाव का अध्ययन करता है। इस शोध में पाया गया कि–

- विवेकानंद का राष्ट्रवाद सांस्कृतिक राष्ट्रवाद था।
- सामाजिक उत्थान को राष्ट्रीय उत्थान की पूर्वशर्त माना गया।
- युवाओं को सामाजिक परिवर्तन का मुख्य साधन माना गया।

स्वामी विवेकानन्द केवल भारत के महान आध्यात्मिक गुरु ही नहीं थे, बल्कि वे विश्व स्तर पर दर्शन, धर्म, शिक्षा, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, नेतृत्व, अंतरधार्मिक संवाद तथा योग के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण विषय भी हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, जापान और अन्य देशों के अनेक विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों में उनके विचारों पर व्यापक शोध कार्य हुए हैं। इन अध्ययनों में उनके वेदान्त दर्शन, शिक्षा–दृष्टि, मानवतावाद, नेतृत्व, योग, राष्ट्रवाद तथा पूर्व और पश्चिम के बीच सांस्कृतिक समन्वय में उनके योगदान का विश्लेषण किया गया है।
स्वामी विवेकानन्द ने 1893 में शिकागो के विश्व धर्म संसद में अपने ऐतिहासिक भाषण के माध्यम से अमेरिका को भारतीय वेदान्त और योग से परिचित कराया। उनके ऐतिहासिक भाषण के बाद अमेरिकी विश्वविद्यालयों में विवेकानन्द के विचार अकादमिक अध्ययन का महत्त्वपूर्ण विषय बन गए। अमेरिका के अनेक विश्वविद्यालयों, विशेषकर हार्वर्ड विश्वविद्यालय, कोलंबिया विश्वविद्यालय, यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो तथा यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में उनके दर्शन, वेदान्त तथा धार्मिक बहुलवाद, सांस्कृतिक संवाद तथा भारतीय आध्यात्मिक परम्परा पर अनेक शोध किए गए।
इन अध्ययनों में यह निष्कर्ष निकाला गया कि विवेकानन्द ने भारतीय आध्यात्मिकता को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया तथा धर्म को संकीर्णता से मुक्त कर सार्वभौमिक मानवता का संदेश दिया। अमेरिकी विद्वानों ने उन्हें पूर्व और पश्चिम के बीच सांस्कृतिक सेतु की संज्ञा दी। प्रमुख शोधार्थियों एवं उनके शोध कार्यों का निम्नलिखित विवरण प्रस्तुत है।

- जेफ्री डी लॉन्ग (2024) का लेख स्वामी विवेकानंद के अद्वैत दर्शन के परिप्रेक्ष्य में भारत में जाति संबंधी पूर्वाग्रह, जातिगत भेदभाव एवं सामाजिक चिंतन की पड़ताल करता है। लेखक के अनुसार भारत में जाति आज भी एक संवेदनशील मुद्दा है और स्वामी विवेकानंद के समय में भी ऐसा ही था। सामाजिक संगठन की इस व्यवस्था की सामाजिक न्याय के पैरोकार सही ही आलोचना करते हैं क्योंकि यह भारतीय समाज में असमानता को बढ़ावा देती है और उसे बनाए रखती है। चूँकि ऐतिहासिक रूप से हिंदू धर्मग्रंथों, खासकर मनुस्मृति जैसे धर्मशास्त्रों, का हवाला देकर इसे सही ठहराया गया है, इसलिए जाति–आधारित भेदभाव या जातिवाद को अक्सर हिंदू परंपराओं का एक जरूरी या स्वाभाविक हिस्सा बताया गया है, खासकर हिंदू धर्म के आलोचकों द्वारा। जाति को हिंदू धर्म और सामाजिक अन्याय से जोड़ने का नतीजा यह निकलता है कि हिंदू धर्म को स्वाभाविक रूप से बुरा और अन्यायपूर्ण धर्म माना जाने लगता है। ऐसी सरलीकृत धारणाएँ इस बात पर ध्यान नहीं देतीं कि प्रतिष्ठित हिंदू गुरुओं और खुद स्वामी विवेकानंद ने भी जातिगत भेदभाव की कितनी कड़ी निंदा की है। इसलिए, आज की दुनिया में ऐसे भेदभाव के खिलाफ तर्क देने और हिंदू धर्म को स्वाभाविक रूप से जातिवादी बताने वाली आलोचनाओं का जवाब देने के लिए, अद्वैत वेदांत के आधार पर जातिगत भेदभाव और असल में, हर तरह के भेदभाव को स्वामी विवेकानंद द्वारा खारिज किए जाने को फिर से स्पष्ट करना जरूरी है। अंत में, यह भी ध्यान दिया गया कि जाति के बारे में विवेकानंद की आलोचनाएँ अद्वैत परंपरा की एक समकालीन जाति–विरोधी आवाज से मेल खाती हैं।
- वर्ष 2013 में माइकल जॉर्डन ऑल्टमैन ने अपने डॉक्टरेट शोध शीर्षक–'इमैजिनिंग हिंदूज : उन्नीसवीं सदी के अमेरिका में भारत और धर्म'–में उन्नीसवीं शताब्दी के अमेरिका में भारत और हिन्दू धर्म की अवधारणा का विश्लेषण किया है। शोध में यह प्रतिपादित किया गया है कि यद्यपि 1893 में स्वामी विवेकानन्द के शिकागो भाषण को अमेरिका में हिन्दू धर्म के परिचय का प्रमुख बिन्दु माना जाता है, किन्तु अमेरिका में भारत और हिन्दू धर्म के प्रति जिज्ञासा तथा विमर्श इससे पहले भी विद्यमान था। शोधार्थी ने यह निष्कर्ष दिया कि स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिकी समाज में हिन्दू धर्म की एक सकारात्मक, दार्शनिक तथा सार्वभौमिक छवि स्थापित की और भारत की आध्यात्मिक परम्परा को नई पहचान प्रदान की।
- वर्ष 1997 में वरघीस एलेन्गडन ने अपने शोध शीर्षक–'स्वामी विवेकानंद और मिर्सिया एलियाडे के विचारों में मानवीय अस्तित्व और पारलौकिकता'–में स्वामी विवेकानन्द तथा मिर्चिया एलियाडे के मानव अस्तित्व एवं आध्यात्मिक उत्कर्ष संबंधी विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोधार्थी ने विवेकानन्द के वेदान्त दर्शन, आत्मज्ञान, मुक्ति तथा मानव जीवन के उद्देश्य का गहन विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि उनके विचार आधुनिक आध्यात्मिक मनोविज्ञान तथा धर्म–दर्शन के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।
- मेरी लुईज बर्क के द्वारा प्रस्तुत शोध ग्रन्थ–'पश्चिम में स्वामी विवेकानंद : नई खोजें' (6 खण्ड)–यद्यपि विश्वविद्यालयीय शोध प्रबन्ध नहीं है, फिर भी अमेरिका में स्वामी विवेकानन्द पर किया गया यह सबसे प्रामाणिक ऐतिहासिक शोध माना जाता है। मेरी लुईज बर्क ने अमेरिका, इंग्लैंड तथा अन्य देशों के अभिलेखागार, समाचार–पत्रों, निजी पत्रों, यात्रा विवरणों तथा ऐतिहासिक दस्तावेजों के आधार पर स्वामी विवेकानन्द के पश्चिमी देशों के प्रवास का पुनर्निर्माण किया। इस शोध ने विवेकानन्द के अमेरिका प्रवास से जुड़े अनेक नए ऐतिहासिक तथ्यों को प्रकाश में लाया और आधुनिक विवेकानन्द अध्ययन की आधारशिला रखी।

वर्ष 1994 में अमेरिका के सेंट ओलाफ कॉलेज से जुड़े विद्वान प्रोफेसर अनन्तानन्द रामबचन ने स्वामी विवेकानन्द के वेदान्त दर्शन, शास्त्रों की व्याख्या तथा आधुनिक हिन्दू चिन्तन पर व्यापक शोध किया। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि विवेकानन्द ने अद्वैत वेदान्त को आधुनिक विश्व की आवश्यकताओं के अनुरूप व्याख्यायित किया तथा उसे सार्वभौमिक मानव कल्याण का दर्शन बनाया। उनके शोध ने अमेरिकी धार्मिक अध्ययन में विवेकानन्द के विचारों को नई दिशा प्रदान की।
अमेरिका में हुए शोध अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि स्वामी विवेकानन्द केवल भारत के आध्यात्मिक नेता नहीं, बल्कि वैश्विक दार्शनिक एवं सांस–तिक विचारक के रूप में स्थापित हैं। अमेरिकी शोधार्थियों ने उनके वेदान्त दर्शन, धार्मिक सहिष्णुता, शिक्षा–दृष्टि, योग, मानवतावाद तथा अन्तर्धार्मिक संवाद को आधुनिक विश्व के लिए अत्यन्त प्रासंगिक माना है। इन अध्ययनों ने विवेकानन्द को पूर्व और पश्चिम के बीच सांस–तिक सेतु तथा वैश्विक आध्यात्मिक चिन्तक के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

स्वामी विवेकानन्द के वेदान्त दर्शन, भारतीय राष्ट्रवाद तथा आधुनिक हिन्दू चिंतन पर ब्रिटेन के ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय तथा स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज (SOAS), लंदन में व्यापक अध्ययन हुए हैं। ब्रिटिश शोधकर्ताओं ने यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि विवेकानन्द ने भारतीय संस्कृति को आधुनिक संदर्भों में पुनर्परिभाषित किया तथा औपनिवेशिक काल में भारतीय समाज में आत्मगौरव और आत्मविश्वास का संचार किया। उनके विचारों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के वैचारिक विकास को भी प्रभावित किया।

ब्रिटेन स्वामी विवेकानन्द के विचारों के अध्ययन का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। स्वामी विवेकानन्द ने 1895 और 1896 में इंग्लैंड की यात्राओं के दौरान अनेक व्याख्यान दिए, जिनसे ब्रिटिश विद्वानों में वेदान्त, भारतीय दर्शन तथा तुलनात्मक धर्म के प्रति रुचि विकसित हुई। इसके परिणामस्वरूप ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, केंट विश्वविद्यालय, लंदन विश्वविद्यालय तथा स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज (SOAS), लंदन जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में उनके जीवन, दर्शन, राष्ट्रवाद, धार्मिक बहुलवाद तथा आधुनिक हिन्दू धर्म पर अनेक शोध एवं अकादमिक अध्ययन किए गए।

- वर्ष 2017 में नंदिनी अरुण महतानी ने अपने शोध शीर्षक–'स्वामी विवेकानंद पर पुनर्विचार–महाद्वीपीय टकराव और हिंदू परंपराओं की नई प्रस्तुति' में यह विश्लेषण किया कि स्वामी विवेकानन्द ने उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हिन्दू परम्पराओं को आधुनिक वैश्विक संदर्भ में किस प्रकार पुनर्परिभाषित किया। शोध में यह प्रतिपादित किया गया कि विवेकानन्द ने पूर्व और पश्चिम के मध्य वैचारिक संवाद स्थापित करते हुए भारतीय आध्यात्मिक परम्परा को आधुनिक भाषा और तर्क के माध्यम से प्रस्तुत किया। शोधार्थी ने यह भी स्पष्ट किया कि विवेकानन्द के विचार केवल पाश्चात्य प्रभाव का परिणाम नहीं थे, बल्कि वे भारतीय दार्शनिक परम्परा पर आधारित मौलिक चिंतन थे। इस शोध का मुख्य निष्कर्ष यह है कि विवेकानन्द ने आधुनिक हिन्दू धर्म के वैश्विक स्वरूप के निर्माण में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- वर्ष 2013 में ग्लासगो विश्वविद्यालय, यूनाइटेड किंगडम में सोफी हॉच ने अपने शोध 'वैज्ञानिक युग में धार्मिक अनुभव का पुनर्मूल्यांकन–धार्मिक बहुलवाद के शुरुआती दृष्टिकोण' में स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस, एनी बेसेंट तथा एच. पी. ब्लावात्स्की के धार्मिक बहुलवाद संबंधी विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध में विवेकानन्द के धार्मिक सहिष्णुता, सार्वभौमिक धर्म तथा सभी धर्मों की समानता के सिद्धान्तों का विश्लेषण किया गया। शोधार्थी ने निष्कर्ष निकाला कि आधुनिक विश्व में अंतरधार्मिक संवाद की अवधारणा को विकसित करने में विवेकानन्द का योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है तथा उनके विचार आज भी वैश्विक धार्मिक अध्ययन के लिए प्रासंगिक हैं।
- वर्ष 2006 में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, यूनाइटेड किंगडम के प्रोफेसर ग्विलिम बेकरलेज ने स्वामी विवेकानन्द की सेवा–दृष्टि, रामकृष्ण मिशन तथा आधुनिक हिन्दू धर्म पर शोध प्रस्तुत किया। यद्यपि प्रोफेसर ग्विलिम बेकरलेज का कार्य औपचारिक शोध–प्रबंध नहीं है, तथापि वे ब्रिटेन के प्रमुख विवेकानन्द अध्येताओं में गिने जाते हैं। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द की सेवा–परम्परा, रामकृष्ण मिशन की सामाजिक भूमिका तथा आधुनिक हिन्दू संगठनों के विकास पर व्यापक शोध प्रकाशित किए हैं। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक–'स्वामी विवेकानंद की सेवा की विरासत'–में यह प्रतिपादित किया गया है कि विवेकानन्द ने भारतीय संन्यास परम्परा को समाजसेवा से जोड़कर आधुनिक युग में एक नई दिशा प्रदान की। उनके शोधों में यह निष्कर्ष दिया गया है कि विवेकानन्द का व्यावहारिक वेदान्त केवल आध्यात्मिक दर्शन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी प्रभावी माध्यम है।
- वर्ष 2023 में ऑल सोल्स कॉलेज, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, यूनाइटेड किंगडम के प्रोफेसर रूथ हैरिस ने अपने शोध लेख शीर्षक–'विवेकानन्दः भारतीय स्वामी और वैश्विक गुरु' में स्वामी विवेकानन्द के भारतीय संन्यासी से वैश्विक आध्यात्मिक गुरु बनने की प्रक्रिया का विश्लेषण किया है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि विवेकानन्द विभिन्न देशों एवं श्रोताओं के अनुरूप अपने संदेश को प्रस्तुत करते थे, किन्तु उनके मूल सिद्धान्त–अद्वैत वेदान्त, सार्वभौमिकता, मानव सेवा और चरित्र निर्माण–सदैव समान रहे। शोध में यह निष्कर्ष दिया गया कि विवेकानन्द ने आधुनिक विश्व में हिन्दू धर्म की वैश्विक पहचान निर्मित करने में निर्णायक भूमिका निभाई तथा वे पूर्व और पश्चिम के मध्य सांस्कृतिक संवाद के सबसे प्रभावशाली व्यक्तित्वों में से एक थे।
- स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज, यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन में अध्ययन में स्वामी विवेकानन्द के आधुनिक हिन्दू धर्म, वेदान्त दर्शन तथा भारतीय राष्ट्रवाद पर अनेक शोध–पत्र, संगोष्ठियाँ और संपादित ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। विशेष रूप से विलियम रेडिस द्वारा संपादित पुस्तक–'स्वामी विवेकानंद और हिंदू धर्म का आधुनिकीकरण'–में विभिन्न विद्वानों ने विवेकानन्द के दर्शन, राष्ट्रवाद, शिक्षा, धर्म तथा आधुनिक भारतीय समाज पर उनके प्रभाव का बहुआयामी विश्लेषण प्रस्तुत किया है। यह ग्रंथ ब्रिटेन में विवेकानन्द अध्ययन का एक महत्त्वपूर्ण अकादमिक स्रोत माना जाता है।
- ब्रिटेन में हुए शोध अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि स्वामी विवेकानन्द केवल भारतीय संत नहीं थे, बल्कि आधुनिक विश्व के ऐसे दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारक थे जिन्होंने भारतीय वेदान्त, धार्मिक सहिष्णुता, मानव सेवा और सांस्कृतिक संवाद को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित किया। ब्रिटिश विश्वविद्यालयों के शोधार्थियों ने उनके विचारों को आधुनिक हिन्दू धर्म, उपनिवेशवाद, वैश्वीकरण, धार्मिक बहुलवाद तथा अंतरसांस्कृतिक अध्ययन के संदर्भ में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना है। इन अध्ययनों ने यह स्थापित किया कि स्वामी विवेकानन्द पूर्व और पश्चिम के मध्य ज्ञान एवं संस्कृति के प्रभावशाली सेतु थे।
- जर्मनी यूरोप का वह देश है जहाँ भारतीय दर्शन, वेदान्त तथा संस्कृत अध्ययन की अत्यन्त समृद्ध परम्परा रही है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से ही जर्मन दार्शनिकों एवं भारतविदों ने भारतीय आध्यात्मिक परम्पराओं का गहन अध्ययन प्रारम्भ किया। स्वामी विवेकानन्द के 1896 के जर्मनी प्रवास तथा कील विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध दार्शनिक प्रोफेसर पॉल डॉयसन से उनकी भेंट के बाद जर्मनी में उनके विचारों के प्रति विशेष रुचि विकसित हुई। इसके फलस्वरूप जर्मन विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों में उनके दर्शन, व्यावहारिक वेदान्त, राष्ट्रवाद तथा आधुनिक हिन्दू धर्म पर अनेक शोध एवं शोध–पत्र प्रकाशित हुए।
- बीसवीं शताब्दी के मध्य में हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय, बर्लिन के शोधार्थी हॉर्स्ट रुस्टाउ ने स्वामी विवेकानन्द तथा लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के दार्शनिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध में विवेकानन्द के अद्वैत वेदान्त, कर्मयोग, राष्ट्रवाद तथा मानवतावादी दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया। शोधार्थी ने यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि विवेकानन्द ने भारतीय आध्यात्मिक परम्परा को आधुनिक राष्ट्र निर्माण तथा सामाजिक पुनर्जागरण से जोड़ा। उनके अनुसार विवेकानन्द का दर्शन केवल धार्मिक चिन्तन नहीं,

बल्कि सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय चेतना का भी आधार है।

- 'श्रीरामकृष्ण के आलोक में स्वामी विवेकानन्द के व्यावहारिक वेदान्त का पुनर्मूल्यांकन' शीर्षक पर शोधार्थी आयोन महाराज (2020) ने जर्मन भारतविद् पॉल हैकर द्वारा प्रस्तुत नव–वेदान्त की अवधारणा का आलोचनात्मक परीक्षण किया। शोध में यह सिद्ध किया गया कि स्वामी विवेकानन्द का व्यावहारिक वेदान्त पश्चिमी विचारों से प्रभावित न होकर श्रीरामकृष्ण की शिक्षाओं पर आधारित था। अध्ययन का निष्कर्ष है कि मानव सेवा, करुणा तथा ईश्वर की सर्वव्यापकता का सिद्धान्त विवेकानन्द के दर्शन का मूल आधार है।
- 1995 में जर्मन भारतविद् पॉल हैकर ने 'आधुनिक हिन्दू धर्म एवं नव–वेदान्त' शीर्षक पर शोध किया। पॉल हैकर ने आधुनिक हिन्दू धर्म तथा स्वामी विवेकानन्द के विचारों का गहन अध्ययन किया। उन्होंने यह मत प्रस्तुत किया कि विवेकानन्द ने पारम्परिक वेदान्त को आधुनिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप नया स्वरूप प्रदान किया। यद्यपि उनके निष्कर्षों से अनेक विद्वान पूर्णतः सहमत नहीं हैं, फिर भी आधुनिक विवेकानन्द अध्ययन में उनका शोध अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जाता है। बाद के अनेक शोध इन्हीं के विचारों की समीक्षा और पुनर्मूल्यांकन पर आधारित हैं।
- जर्मनी के म्यूनस्टर विश्वविद्यालय में वैश्विक हिन्दू धर्म परियोजना के अंतर्गत आधुनिक हिन्दू धर्म के विकास का अध्ययन किया गया। इस शोध में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया कि उन्नीसवीं शताब्दी में स्वामी विवेकानन्द ने आधुनिक हिन्दू धर्म के वैश्विक स्वरूप की आधारशिला रखी, जिसे आगे चलकर विभिन्न वैदांतिक संगठनों ने विश्वभर में विकसित किया। अध्ययन में विवेकानन्द को आधुनिक वैश्विक हिन्दू चेतना का प्रमुख प्रवर्तक माना गया।

जर्मनी के कील, हाइडेलबर्ग तथा बर्लिन जैसे विश्वविद्यालयों में भारतीय दर्शन और वेदान्त पर हुए अध्ययनों में स्वामी विवेकानन्द के विचारों का व्यापक उल्लेख मिलता है। इन अध्ययनों में विशेष रूप से अद्वैत वेदान्त, योग, धार्मिक सहिष्णुता, सार्वभौमिक धर्म तथा मानव सेवा के उनके सिद्धान्तों का विश्लेषण किया गया है। शोधकर्ताओं का मत है कि विवेकानन्द ने भारतीय दर्शन को आधुनिक वैज्ञानिक एवं तार्किक भाषा में प्रस्तुत कर पश्चिमी विद्वानों के लिए अधिक सुगम बनाया।

जर्मनी में स्वामी विवेकानन्द पर हुए शोध अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि उन्हें केवल भारतीय संन्यासी के रूप में नहीं, बल्कि आधुनिक वैश्विक दार्शनिक के रूप में देखा गया है। जर्मन विद्वानों ने उनके व्यावहारिक वेदान्त, आधुनिक हिन्दू धर्म, धार्मिक सहिष्णुता तथा मानव सेवा के सिद्धान्तों का गहन अध्ययन किया है। विशेष रूप से पॉल हैकर, हॉर्स्ट रुस्टाउ तथा समकालीन विद्वानों के अध्ययनों ने विवेकानन्द के दर्शन को अंतरराष्ट्रीय अकादमिक विमर्श में स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

फ्रांस के सॉरबोन विश्वविद्यालय तथा अन्य उच्च शिक्षण संस्थानों में विवेकानन्द के मानवतावाद, धार्मिक सहिष्णुता तथा अंतरसांस्कृतिक संवाद पर शोध कार्य किए गए। फ्रांसीसी विद्वानों ने यह निष्कर्ष निकाला कि विवेकानन्द ने विश्व शांति, धार्मिक सद्भाव और मानव समानता के सिद्धांतों को सशक्त आधार प्रदान किया। उनके विचार आज भी वैश्विक शांति अध्ययन में प्रासंगिक माने जाते हैं।

जापान के अनेक विश्वविद्यालयों में बौद्ध दर्शन और वेदान्त के तुलनात्मक अध्ययन के अंतर्गत विवेकानन्द के विचारों का विश्लेषण किया गया। शोधकर्ताओं ने पाया कि विवेकानन्द ने भारतीय और पूर्वी एशियाई आध्यात्मिक परम्पराओं के बीच संवाद स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अमेरिका और यूरोप के अनेक मनोवैज्ञानिकों तथा योग विशेषज्ञों ने विवेकानन्द के राजयोग का अध्ययन किया। आधुनिक मनोविज्ञान, ध्यान, मानसिक स्वास्थ्य तथा चेतना विज्ञान के क्षेत्र में उनके विचारों को अत्यन्त उपयोगी माना गया। विशेष रूप से ध्यान, आत्मनियंत्रण, तनाव प्रबंधन तथा व्यक्तित्व विकास के क्षेत्र में उनके सिद्धांतों को आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों से जोड़ा गया।

विदेशों के अनेक प्रबंधन संस्थानों में विवेकानन्द के नेतृत्व सिद्धांतों पर शोध हुए हैं। इन अध्ययनों में उनके आत्मविश्वास, सेवा–भाव, नैतिक नेतृत्व, निर्णय क्षमता तथा व्यक्तित्व विकास के सिद्धांतों को आधुनिक नेतृत्व मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया गया। शोधकर्ताओं के अनुसार विवेकानन्द का नेतृत्व मॉडल केवल संगठनात्मक सफलता तक सीमित नहीं है, बल्कि मानव मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित है।

अमेरिका, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया के शिक्षा विशेषज्ञों ने विवेकानन्द की शिक्षा–दृष्टि का अध्ययन करते हुए निष्कर्ष निकाला कि उनकी शिक्षा प्रणाली व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर आधारित है। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास है।

शोधों में यह निष्कर्ष सामने आया कि विवेकानन्द ने विभिन्न धर्मों के बीच प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सहयोग और सम्मान का संदेश दिया, जो आज के वैश्विक समाज में भी अत्यंत प्रासंगिक है। विदेशों में हुए शोध अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि स्वामी विवेकानन्द केवल भारत के आध्यात्मिक गुरु नहीं, बल्कि विश्व मानवता के चिंतक थे। उनके विचार दर्शन, शिक्षा, मनोविज्ञान, नेतृत्व, योग, धर्म तथा सांस्कृतिक अध्ययन के अनेक क्षेत्रों में आज भी शोध का महत्वपूर्ण आधार बने हुए हैं। आधुनिक विश्व में धार्मिक सहिष्णुता, मानव सेवा, चरित्र निर्माण, नेतृत्व तथा वैश्विक शांति के संदर्भ में उनके सिद्धांतों की प्रासंगिकता निरंतर बढ़ती जा रही है। उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट है कि स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा–दर्शन, राष्ट्रवाद, आध्यात्मिक मानवतावाद तथा सामाजिक समरसता पर पर्याप्त शोध उपलब्ध हैं। जाति, सामाजिक न्याय और समानता के संदर्भ में भी कुछ महत्वपूर्ण अध्ययन हुए हैं। तथापि स्वामी विवेकानन्द के चिंतन में वंचित वर्ग विषय पर, विशेष रूप से दलित, पिछड़े, श्रमिक तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के संदर्भ में उनके विचारों का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित है। साथ ही उनके चिंतन की समकालीन सामाजिक न्याय, संवैधानिक मूल्यों तथा समावेशी विकास की अवधारणाओं से तुलनात्मक समीक्षा पर भी और अधिक शोध की आवश्यकता है।

## संदर्भ सूची


1. Alengadan V. Human existence and transcendence in Swami Vivekananda's and Mircea Eliade's thought [doctoral dissertation]. California: Graduate Theological Union; 1997.
2. Altman MJ. Imagining Hindus: India and religion in nineteenth century America [doctoral dissertation]. Emory University; 2013.
3. Basak P. Social Issues and Challenges in India: A Contemporary Perspective. 2025.
4. Beckerlegge G. Swami Vivekananda's legacy of service. New Delhi: Oxford University Press; 2006.
5. Burke ML. Swami Vivekananda in the West: New discoveries. Vols. 1–6. Kolkata: Advaita Ashrama; 1983–1987.

6. Damle AN. Vivekananda on Culture and Inequality. Palgrave Macmillan; 2025. Available from: https://doi.org/10.1007/978-3-032-04531-7
7. Datta M. Bhartiya Punarjagran Me Swami Vivekanand Ka Avdan [PhD thesis]. Banaras Hindu University; 1996.
8. Dixit P, Yadav V. A Systematic Review of Empirical Research on Gender Inequality and Women's Empowerment in India. Discov Sustain. 2026;7:1118. Available from: https://doi.org/10.1007/s43621-026-03125-9
9. Eastern and Western Disciples. The life of Swami Vivekananda. 2 vols. Kolkata: Advaita Ashrama; 1912.
10. Gohit RK. Role of Swami Vivekananda in National Awakening [PhD thesis]. Meerut: Chaudhary Charan Singh University.
11. Gupta K. Adhunik Bharatiya Darshan Ko Swami Vivekanand Ka Avadan: Ek Sameekshatmak Adhyayan [PhD thesis]. Banaras Hindu University; 1998.
12. Hacker P. Philology and confrontation: Paul Hacker on traditional and modern Vedānta. Albany: State University of New York Press; 1995.
13. Harris R. Vivekananda: Indian Swami and Global Guru. Religions. 2023;14(8):1041.
14. Hauch S. Reassessing religious experience in a scientific age: Early approaches to religious pluralism [doctoral dissertation]. Glasgow: University of Glasgow; 2013.
15. Isherwood C. Ramakrishna and his disciples. London: Methuen; 1965.
16. King R. Orientalism and religion: Postcolonial theory, India and "The Mystic East". London: Routledge; 1999.
17. Kumar D. Swami Vivekananda Ki Samajik Insaf Ki Avdharna Aur Uska Prabhav Ek Visleshnatmak Addyayan [PhD thesis]. Chaudhary Charan Singh University; 2008.
18. Long JD. On Swami Vivekananda and Caste Prejudice: Ethical Implications of the Experience of Non-Duality. Religions. 2024;15(8):889. Available from: https://doi.org/10.3390/rel15080889
19. Maharaj A. A Re-evaluation of Swami Vivekananda's Practical Vedanta in the Light of Sri Ramakrishna. Journal of Dharma Studies. 2020;2(2):175–187.
20. Mahtani NA. Swami Vivekananda revisited: Continental collision and the (re)packaging of Hindu traditions [doctoral dissertation]. United Kingdom: University of Kent; 2017.
21. Mishra K. Swami Vivekanand Ke Samajik Avam Rajneetik Vicharo Ka Ek Alochanatmak Adhyayan.
22. Nikhilananda S. Vivekananda: A biography. New York: Ramakrishna-Vivekananda Center; 1953.
23. Ojha S. Adhunik Paripreksh Me Swami Vivekanand Ka Samajwadi Chintan [PhD thesis]. Faizabad: Dr. Rammanohar Lohia Avadh University; 2010.
24. Radice W, editor. Swami Vivekananda and the modernization of Hinduism. Delhi: Oxford University Press; 1998.
25. Rambachan A. The limits of scripture: Vivekananda's reinterpretation of the Vedas. Honolulu: University of Hawaii Press; 1994.
26. Rolland R. The life of Vivekananda and the universal gospel. Kolkata: Advaita Ashrama; 1931.
27. Rüstau H. Swami Vivekananda: Patriot and Philosopher. Berlin: Research publication affiliated with Humboldt University; 1963.
28. Seetaram. Swami Vivekanand Ka Samajwadi Evam Manavwadi Darshan [MPhil thesis]. Bikaner: Maharaja Ganga Singh University; 2009.
29. Sharma A, editor. Neo-Hindu views of Christianity. Leiden: Brill Academic Publishers; 1993.
30. Sharma GR. Swami Vivekanand Ke Vichar Aur Unka Rashtriya Chetna Par Prabhav [PhD thesis]. Agra: Dr. Bhimrao Ambedkar University; 1980.
31. Sivakumar MV. Contributions of Swami Vivekananda to The National Integration of India [PhD thesis]. Kottayam: Mahatma Gandhi University; 2006.
32. Venkateswarlu K. Swami Vivekananda and The Dignity of The Human Person: A Critical Study [PhD thesis]. Tirupati: Sri Venkateswara University; 2012.
33. Vivekananda S. The complete works of Swami Vivekananda. Vols. 1–9. Kolkata: Advaita Ashrama; 2013.
34. Yadav S. Swami Vivekanand Ka Samaj Darshan Evam Dharm Darshan [PhD thesis]. Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith; 1999.
35. गुप्ता. विनीत (*2024*). स्वामी विवेकान्द के राजनैतिक एव सामाजिक चिंतन की वर्तमान परिपेक्ष में सार्थकता . भारतीय आधुनिक शिक्षा, *33*(*04*), p *35–43*-
36. तिवारी, विनोद प्रकाश एवं यादव, सत्य नारायण (*2026*). भारतीय ज्ञानपरंपरा के संदर्भ में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन का विश्लेषण, International Journal of Research in Academic World, Vol. *5(6).*
37. शर्मा, संतोष कुमार, एवं अग्रवाल, अक्षय ;;2023द्ध ण्स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन एवं वर्तमान शैक्षिक प्तिमान का तुलनात्मक अध्ययन Recent Educational & Psychological Researches, 12(4), 32-37, ISSN: 22785949,
38. रेनू एवं चौहान, भूपेंद्र सिंह ;2022द्ध,वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिकदर्शन की प्रासंगिकता पर एक अध्ययन-", JASRAE, vol. 19, no. 4, pp. 330–334, July,. https://ignited.in/index.php/jasrae/article/view/13969
39. पुष्पेन्द्र एवं कौशल, अमिता (*2021*). स्वामी विवेकानन्द एवं महात्मा गांधीजी के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन श्रवनतदंस of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, *18(1)*, *120–125.*